वार्षिक पत्रिका
1998-99

प्रवाहिनी

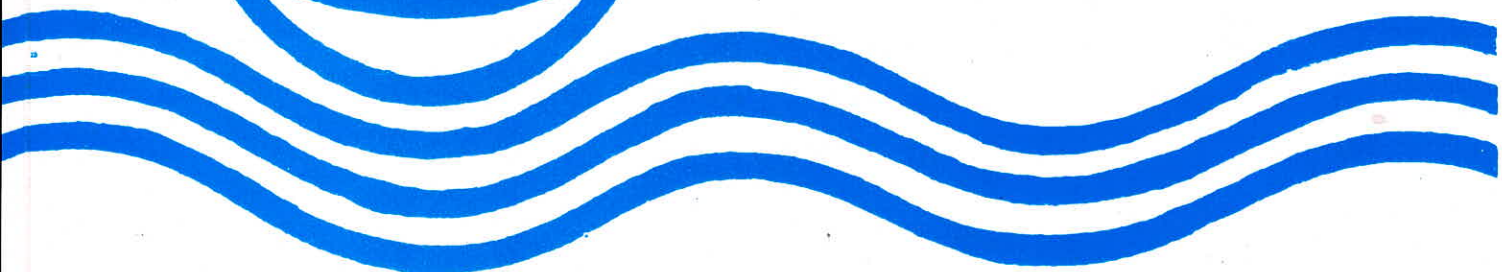

NATIONAL INSTITUTE OF HYDROLOGY

आपो हि ष्ठा मयोभुवः

राष्ट्रीय जल विज्ञान संस्थान
रूड़की - 247 667

राजभाषा स्वर्णजयन्ती वर्ष

वार्षिक पत्रिका
अंक - 6, 1998-99

प्रवाहिनी

राष्ट्रीय ज़लविज्ञान संस्थान
रूड़की- 247667

सम्पादक मंड़ल

डा० (श्रीमती) रमा देवी मेहता, हिन्दी अधिकारी एवम् वैज्ञानिक 'बी'
श्री अशोक कुमार द्विवेदी, वैज्ञानिक 'बी'

सम्पादकीय सहयोग

श्री तिलकराज सपरा, अनुसंधान सहायक

एवम्

टंकण

महेन्द्र सिंह, आशुलिपिक (हिन्दी)

रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों तथा रचयिताओं के अपने हैं। सम्पादक मण्डल का उनसे सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

डा० सौभाग्य मल सेठ
निदेशक

राष्ट्रीय ज़ल विज्ञान संस्थान, रूड़की
पिन कोड 247667(उ०प्र०)
दूरभाष 0133-72106 (कार्यालय)
01332-72860 (आवास)
फ़ैक्स 01332-72123
टेलीग्रामः ज़लविज्ञान, रुड़की

संदेश

यह अत्यन्त प्रसन्नता की बात है कि राष्ट्रीय ज़लविज्ञान संस्थान गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी अपनी हिन्दी वर्षिक पत्रिका 'प्रवाहिनी' का छठा अंक प्रकाशन कर रहा है। प्रवाहिनी का यह अंक इस शताब्दी का अंतिम अंक होने के नाते अति महत्वपूर्ण है तथा इसको प्रकाशित करते हुए हमें अति हर्ष एवम् गर्व का अनुभव हो रहा है।

इस पत्रिका के द्वारा संस्थान के वैज्ञानिकों एवम् सहकर्मियों को देश की राजभाषा हिन्दी के माध्यम से अपने वैज्ञानिक, साहित्यिक, समाजिक एवम् आर्थिक सोच-विचार, समझ तथा लेखनी क्षमता की समृद्धि, अभिवृद्धि तथा प्रसार का सुअवसर मिलता है। यो तो संस्थान ने प्रशासनिक कार्यों के साथ -साथ तकनीकी कार्यो का हिन्दी माध्यम से सम्पन्न करने में उल्लेखनीय प्रयास कर कुछ महत्वपूर्ण सफ़लताए अर्जित की हैं, तथा और भी बहुत कुछ करने की संभावनाए हैं। प्रस्तुत अंक में मुख्यालय एवम् क्षेत्रीय कार्यालयों में कार्यरत कर्मियों का अभूतपूर्व योगदान प्राप्त हुआ है, जिसके फ़लस्वरूप यह विभिन्न विषयो पर निबन्धों, कविताओं की ज्ञानगंगा के रुप मे प्रस्फ़ुटित हो सकी है। प्रवाहिनी सम्पादक मंडल के समस्त सदस्यों का मैं व्यक्तिगत तौर पर आभार प्रकट करता हूं जिन्होंने अटूट निष्ठा और कठिन मेहनत का परिचय देते हुए इस पत्रिका को एक महीने के अल्पावधि में मुद्रित कराकर आज हिन्दी दिवस के इस शुभावसर पर उपलब्ध कराने में उल्लेखनीय योगदान दिया है। मुझे विश्वास है कि भविष्य में भी ये लोग इसी तरह लगन का परिचय देते हुए राजभाषा की उन्नति में अपना योगदान करते रहेंगे।

मै आशा करता हूं कि प्रवाहिनी का यह अंक पाठको को रुचिकर लगेगा तथा अगला इक्कीसवी सदी का प्रथम-अंक और भी अधिक सारगर्भित सामग्री के साथ प्रकाशित होगा।

राजभाषा के स्वर्णजयन्ती वर्ष के इस प्रकाशन अंक की सफलता की शुभकामनाओ सहित,

सौभाग्य सेठ

(सौभाग्य मल सेठ)

दिनांक सितम्बर 14, 1999
स्थान : रा०ज०वि०सं० रूड़की

विषय संदर्भ

क्रम सं०	विषय विवरण	पृष्ठ सं०
1..	संपादकीय	01
2..	स्वतंत्रता दिवस '99 के राष्ट्रीय पर्व पर संस्थान के निदेशक डा० सौभाग्य मल सेठ के सम्बोधन क अंश	03
3..	हिन्दी रिपोर्ट	05
4..	डेल्टा (Δ) नदी व्यवस्था का एक अनोखा क्षेत्र : श्री वाई.आर. सत्याजी राव वैज्ञानिक सी तथा श्री पी.वी.एन. राव वरिष्ठ शोध सहायक	07
5..	एकाग्र मन की शक्ति : डा० भीष्म कुमार, वैज्ञानिक 'ई'	08
6..	पुस्तकालय और समाज़ : श्री प्रदीप कुमार, पुस्तकालय परिचर	12
7.	जीवन संध्या : श्रीमती अंजू चौधरी ; वरिष्ठ शोध सहायक	17
8.	गणित में मनोरंजन : डा.(श्रीमती)रमा मेहता, वैज्ञानिक बी	18
9.	परिभाषाएं - वर्तमान परिप्रेक्ष्य में : पंकज गर्ग प्रधान शोध सहायक	20
10.	शूक्ष्म विद्युतचुम्बकीय तरंगो द्वारा संचालित चूल्हा - माइक्रोवेव ओवन : परिचय एवम् देखभाल, श्री अशोक कुमार द्विवेदी, वैज्ञानिक- बी	21
11.	एक मानव की इच्छा : मु० नुसरत इज़हार सिद्दीकी, वैयक्तिक सहायक	25
12.	सेना का त्रिनेत्र -रडार : श्री मनोज गोयल, शोध सहायक	26
13.	क्या आप जानते हैं ? : गुरदीप सिंह दुआ, तकनीशियन	27
14.	पूँछ वाला आदमी :श्री मुकेश कुमार शर्मा, जे.ई. (वरिष्ठ ग्रेड)	28
15.	भारतीय क्रिकेट का इतिहास और विश्वकप- 1999 : नीलाभ कुमार द्विवेदी, कक्षा- 10	30
16.	अध्यात्म - एक विषय-प्रयोग, एक विचार : श्री राजू जुयाल, शोध सहायक	36
17.	ज़ल विज्ञानीय कहावतों का वैज्ञानिक विश्लेषण : श्री मुकेश कुमार शर्मा, जे० ई० वरिष्ठ ग्रेड	37
18.	अनमोल सूत्र : श्री पंकज गर्ग	39
19.	प्रश्नोत्तर	40
20.	दोनों हाथ उलीचो : सतीश कुमार कश्यप, संदेशवाहक	41
21.	चुटकले : कु० गर्विता कक्षा. VII	42
	निबन्ध	
22.1	प्रकृति का बढ़ता प्रकोप - कारण एवं निवारण : तेजपाल सिंह, परिचर (प्रथम पुरस्कार)	43
22.2	प्रकृति का बढ़ता प्रकोप - कारण एवं निवारण : विनय कुमार श्रीवास्तव, उच्च श्रेणी लिपिक (द्वितीय पुरस्कार)	47
22.3	प्रकृति का बढ़ता प्रकोप - कारण एवं निवारण : अशोक कुमार द्विवेदी, वैज्ञानिक बी (तृतीय पुरस्कार)	51